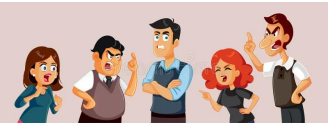


समझा?

23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



"मीठे बच्चे - ब्लड कनेक्शन में ही दुःख है, तुम्हें



उसका त्याग कर आपस में आत्मिक लव रखना है,

यही सुख और आनंद का आधार है"



प्रश्न:- विजय माला में आने के लिए विशेष कौन सा पुरुषार्थ चाहिए?



उत्तर:- विजय माला में आना है तो विशेष होली (पवित्र) बनने का पुरुषार्थ करो। जब पक्के संन्यासी



अर्थात् निर्विकारी बनेंगे तब विजय माला का दाना बनेंगे। कोई भी कर्मबन्धन का हिसाब-किताब है तो



वारिस नहीं बन सकते, प्रजा में चले जायेंगे।

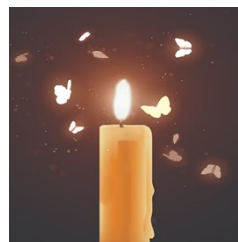
Mind very well...

गीत:महफिल में जल उठी शमा परवानों के लिए....

Click

(महफिल में जल उठी शमा, परवाने के लिये प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये) -२

चारों तरफ़ लगाए फेरे, फिर भी हरदम दूर रहे
उल्फ़त देखो आग बनी है, मिलने से मजबूर रहे
यही सज़ा हैं दुनिया में
यही सज़ा हैं दुनिया में, दीवाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये



मरने का है नाम मुहब्बत, जलने का है नाम जवानी
पत्थर दिल हैं सुनने वाले, कहने वाला आँख का पानी
आँसू आये आँखों में
आँसू आये आँखों में, गिर जाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

महफ़िल में जल उठी शमा, परवाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। देखो हम महिमा ही करते हैं अपने

बाप की। अहम् आत्मा जरूर अपने फादर का शो

करेंगे ना। सन शोज़ फादर। तो अहम् आत्मा, तुम

भी कहेंगे हम आत्मायें, हम सबका फादर एक

परमात्मा है जो सबका पिता है। यह तो सब मानेंगे।

ऐसे नहीं कहेंगे कि हम आत्माओं का फादर कोई

अलग-अलग है। फादर सबका एक है। अब हम

उनके बच्चे होने कारण उनके ऑक्यूपेशन को

जानते हैं। हम ऐसे नहीं कह सकते कि परमात्मा

सर्वव्यापी है। फिर तो सबमें परमात्मा हो जाए।

फादर को याद कर बच्चे खुश होते हैं क्योंकि जो

कुछ फादर के पास होता है उनका वर्सा बच्चे को

मिलता है। अब हम हैं परमात्मा के वारिस, उनके

पास क्या है? वह आनंद का सागर है, ज्ञान का सागर

है, प्रेम का सागर है। हमको मालूम है तब हम उनकी

महिमा करते हैं। दूसरे यह नहीं कहेंगे। करके कोई

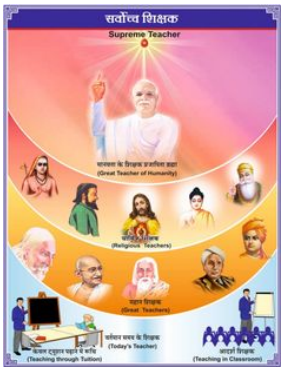
कहते भी हैं लेकिन वह कैसे है, यह तो पता ही नहीं।

बाकी तो सब कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है।

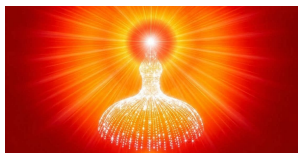
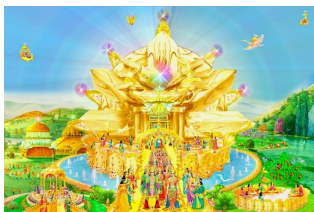
लेकिन हम उनके बच्चे हैं तो अपने निराकार इमार्टल

बाप की महिमा वर्णन करते हैं कि वह आनंद का

सागर, ज्ञान का सागर, प्रेम का भण्डार है। लेकिन

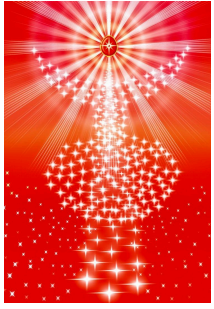


Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

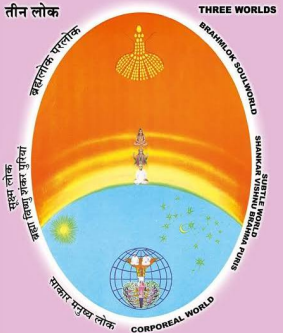
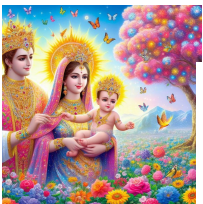


कोई प्रश्न उठायेगा कि आप कहते हो कि वहाँ इनकारपोरियल वर्ल्ड में तो दुःख सुख से न्यारी अवस्था रहती है। वहाँ सुख अथवा आनंद अथवा प्रेम कहाँ से आया? अब यह समझने की बातें हैं। यह जो आनंद, सुख अथवा प्रेम कहते हैं, यह तो हुई सुख की अवस्था लेकिन वहाँ शान्ति देश में आनंद, प्रेम अथवा ज्ञान कहाँ से आया? वह सुख का सागर जब इस साकार सृष्टि में आते हैं तब आकर सुख देते हैं। वहाँ तो दुःख सुख से न्यारी अवस्था में रहते हैं क्योंकि तुमको समझाया है कि एक है दुःख सुख से न्यारी दुनिया, जिसको इनकारपोरियल वर्ल्ड कहते हैं। दूसरी फिर है सुख की दुनिया, जहाँ सदा सुख, आनंद रहता है, जिसको स्वर्ग कहते हैं और यह है दुःख की दुनिया जिसको नर्क अथवा आइरन एजड वर्ल्ड कहते हैं। अब इस आइरन एजड वर्ल्ड को परमपिता परमात्मा जो सुख का सागर है, वह आकर इसे बदलाकर आनंद, सुख का, प्रेम का भण्डार बनाते हैं। जहाँ सुख ही सुख है। प्रेम ही प्रेम है। वहाँ जानवरों में भी बहुत प्रेम रहता है। शेर गाय भी इकट्ठे जल पीते हैं, इतना उन्हीं में प्रेम रहता है। तो परमात्मा आकर जो अपनी राजधानी स्थापन

23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन करते हैं, उसमें सुख और आनंद है। बाकी



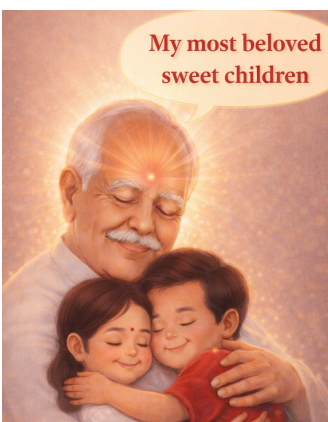
इनकारपोरियल दुनिया में तो सुख आनंद की बात ही नहीं, प्रेम की बात ही नहीं है। वह तो है इनकारपोरियल आत्माओं का निवास स्थान। वह है सबकी रिटायर लाइफ अथवा निर्वाण अवस्था। जहाँ दुःख सुख की कोई फीलिंग नहीं रहती। वह दुःख सुख का पार्ट तो इस कारपोरियल वर्ल्ड में चलता है।



इस ही सृष्टि पर जब स्वर्ग है तो इटरनल आत्मिक लव रहता है क्योंकि दुःख है ब्लड कनेक्शन में।

ये पक्का समझ लो..

संन्यासियों में भी ब्लड कनेक्शन नहीं रहता इसलिए उनमें भी दुःख की कोई बात नहीं रहती है। वह तो कहते मैं सत चित आनंद स्वरूप हूँ क्योंकि ब्लड कनेक्शन को त्याग देते हैं। वैसे यहाँ भी तुम्हारा कोई ब्लड कनेक्शन नहीं है। यहाँ हम सबका आत्मिक लव है, जो परमात्मा सिखलाते हैं।



बाप कहते हैं ⁶⁶यू आर माई बील्वेड सन्स। ⁹⁹हमारा आनंद, प्रेम, सुख तुम्हारा है क्योंकि तुमने वह दुनिया छोड़कर हमारी आकर गोद ली है। यह भी तुम

Points:

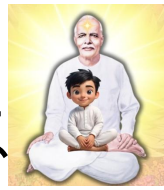
ज्ञान

योग

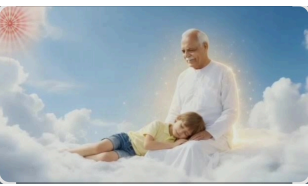
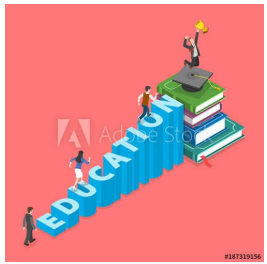
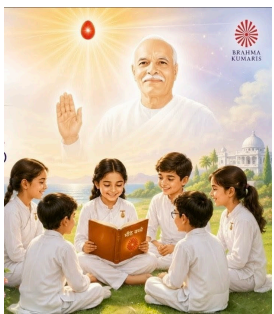
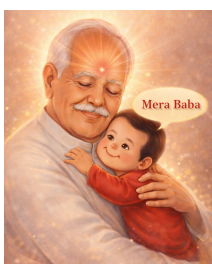
सेवा

M.imp.

23-10-2026 प्रातःमुरली ओम्

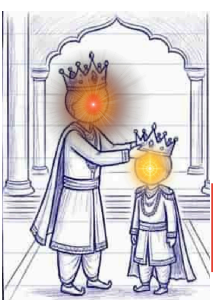


"बापदादा" मधुबन



प्राैक्टिकल लाइफ में आकर गोद में बैठे हो। ऐसे नहीं जैसे बाकी जो संन्यास कर उनकी गोद लेते हैं वही बील्वेड सन बनते हैं क्योंकि वही गुरु के पीछे गद्दी पर बैठते हैं। बच्चे और प्रजा में रात दिन का फ़र्क रहता है। वह वारिस बन वर्सा लेते हैं। जैसे तुमने उनसे ब्लड कनेक्शन तोड़ इस निराकार वा साकार की गोद ली है तो वारिस बन गये हो। इसमें भी फिर जितना ज्ञान लेंगे वह है ब्लिस। एज्युकेशन को ब्लिस कहा जाता है। तो जितना वह उठायेंगे, उतना उस राजधानी में प्रजा में सुख लेंगे। यह गॉडली एज्युकेशन ब्लिस है ना, जिससे सुप्रीम पीस एण्ड हैपीनेस मिलती है। यह अटल अखण्ड सुख शान्तिमय स्वराज्य है गॉड की प्रॉपर्टी, जो बच्चों को मिलती है। फिर जितना जितना जो ज्ञान उठायेंगे, उतना बाप का वर्सा मिल जायेगा। जैसे तुम्हारे पास इतने जिज्ञासू आते हैं वह है, तुम्हारी बील्वेड प्रजा। बच्चे नहीं क्योंकि आते जाते रहते हैं, बच्चे भी हो सकते हैं क्योंकि प्रजा से कोई वारिस भी तो बन जाते हैं। जब ज्ञान लेते लेते देखते हैं यहाँ तो अथाह सुख और शान्ति है, उस दुनिया में तो दुःख है तो आकर गोद ले लेते हैं। फौरन तो कोई बच्चा नहीं बन

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



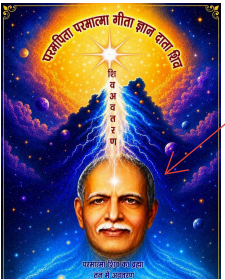
23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जाता। तुम भी पहले आते जाते थे फिर सुनते-सुनते बैठ गये, तो वारिस बन गये। संन्यासियों के पास भी ऐसे होता है। सुनते-सुनते जब समझते हैं संन्यास में तो शान्ति सुख है तो संन्यास कर लेते हैं। यहाँ भी जब टेस्ट आ जाती है तो बील्वेड सन बन जाते हैं तो जन्म जन्मान्तर के लिए वर्सा मिल जाता है। वह फिर दैवी सिजरे में आते रहते हैं। प्रजा तो साथ नहीं रहती वह कहाँ-कहाँ कर्मबन्धन में चले जाते।



जैसे गीत में कहते हैं महफिल में जल उठी शमा परवानों के लिए। तो परवाने भी शमा पर डांस करते करते मर जाते हैं। कोई चक्कर लगाए चले जाते हैं।

यह तन भी एक शमा है जिसमें आलमाइटी बाबा का प्रवेश है। तुम परवाने बन आये, आते जाते आखिर जब राज समझ लिया तो बैठ गये। आते तो हजारों लाखों हैं, तुम्हारे द्वारा भी सुनते रहते हैं। वह तो जितना सुनेंगे उतना पीस और ब्लिस का वरदान लेते जायेंगे क्योंकि यह इमार्टल फादर की शिक्षा तो विनाश नहीं होती। इसको कहते हैं अविनाशी ज्ञान



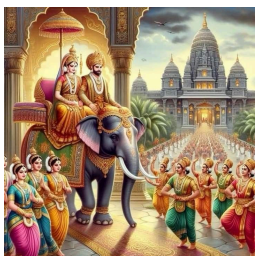
Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



समझा?

23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

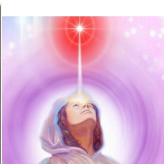
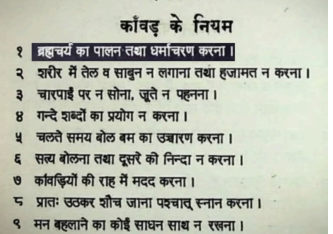
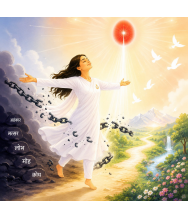
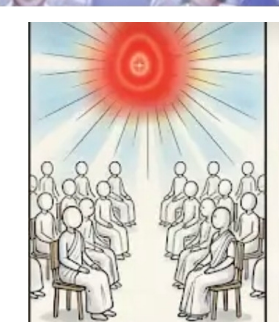
धन। उसका विनाश नहीं होता। तो जो थोड़ा बहुत भी सुनते हैं वह प्रजा में आयेंगे जरूर। वहाँ तो प्रजा भी बहुत-बहुत सुखी है। इटरनल ब्लिस है क्योंकि वहाँ सब सोल कॉन्सेस रहते हैं। यहाँ बॉडी-कान्सेस हो गये हैं इसलिए दुःखी हैं। वहाँ तो है ही स्वर्ग, वहाँ दुःख का नाम निशान नहीं। जानवर ही कितना सुख शान्ति में रहते हैं तो प्रजा में कितना प्रेम और सुख होगा। यह तो जरूर है सब तो वारिस नहीं बनते। यहाँ तो 108 पक्के संन्यासी विजय माला के दाने बनने वाले हैं। वह भी अभी बने नहीं हैं, बन रहे हैं। साथ-साथ प्रजा भी बन रही है। वह भी बाहर रहकर सुनते रहते हैं। घर बैठे योग लगा रहे हैं। योग लगाते-लगाते कोई फिर अन्दर आ जाते तो प्रजा से वारिस बन जाते। वह जब तक कर्मबन्धन का हिसाब है कुछ तब तक बाहर रह योग लगाते, निर्विकारी रहते आते हैं। तो घर में रह जो निर्विकारी रहते तो घर में झगड़ा जरूर होगा क्योंकि कामेश क्रोधेशु... काम महाशत्रु पर जब तुम जीत पाते हो, विष देना बन्द करते हो तो झगड़ा होता है।





Attention Please..!

बाप कहते हैं बच्चे, मौत सामने खड़ा है। सारी दुनिया विनाश होनी है। जैसे बुढ़ों को कहते मौत सामने है, परमात्मा को याद करो। बाप भी कहते बच्चे निर्विकारी बन जाओ। परमात्मा को याद करो। जैसे तीर्थ पर जाते हैं तो काम क्रोध सब बन्द कर देते हैं। रास्ते में काम चेष्टा थोड़ेही करेंगे। वह तो सारा रास्ता अमरनाथ की जय, जय करते जाते लेकिन लौट आते तो फिर वही विकारों में गोता खाते रहते, तुमको तो लौटना नहीं है। काम, क्रोध में आना नहीं है। विकारों में जायेंगे तो पद भ्रष्ट हो जायेंगे। होलीनेस नहीं बनेंगे। जो होली बनेंगे वह विजय माला में आयेंगे। जो फेल होंगे वह चन्द्रवंशी घराने में चले जायेंगे।

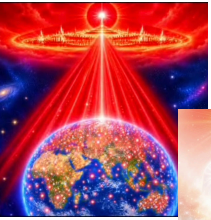
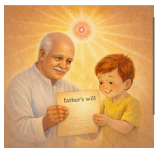


सुप्रीम टीचर और
रूहानी पाठशाला।

यह तुम सबको परमपिता परमात्मा बैठ पढ़ाते हैं। वही ज्ञान का सागर है ना। वहाँ इनकारपोरियल दुनिया में तो आत्माओं को बैठ ज्ञान नहीं सुनायेंगे। यहाँ आकर तुम्हें ज्ञान सुनाते हैं। कहते हैं तुम हमारे

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

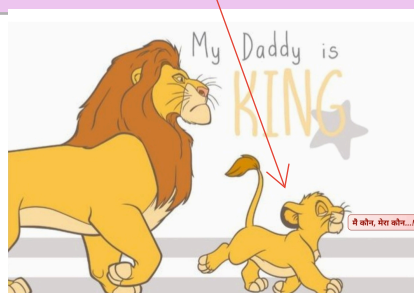
23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



बच्चे हो। जैसे हम प्युअर हैं वैसे तुम भी प्युअर बनो। तो तुम सतयुग में सुखमय, प्रेममय राज्य करेंगे, जिसको वैकुण्ठ कहते हैं। अब यह दुनिया बदल रही है क्योंकि आइरन एज से गोल्डन एज बन रही है। फिर गोल्डन एज से सिल्वर एज में बदलेंगे। सिल्वर एज से कॉपर एज, फिर कॉपर एज से आइरन एज में बदलते जायेंगे। ऐसे दुनिया बदलती रहती है। तो अब यह दुनिया बदल रही है। कौन बदला रहा है? गॉड हिमसेल्फ, जिनके तुम बील्वेड बच्चे बने हो। प्रजा भी बन रही है लेकिन बच्चे, बच्चे हैं, प्रजा प्रजा है। जो संन्यास करते वह वारिस बन जाते। उनको रॉयल घराने में अवश्य ले जाना है। लेकिन अगर ज्ञान इतना नहीं उठाया है तो पद नहीं पायेंगे। जो पढ़ेगा वह नवाब बनेगा। जो आते जाते हैं वह फिर प्रजा में आयेंगे। फिर जितना होली बनेंगे उतना सुख मिलेगा। बील्वेड तो वह भी बनते लेकिन फुल बील्वेड तब बनते हैं जब बच्चा बनते हैं। समझा।

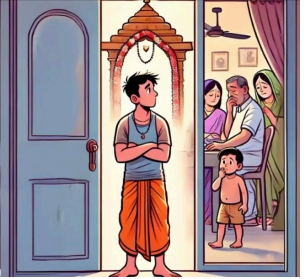
Choice is All yours...

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...



संन्यासी भी बहुत प्रकार के होते हैं। एक होते हैं जो

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति मधुबन



घरबार छोड़ जाते हैं, दूसरे फिर ऐसे भी होते हैं जो गृहस्थ में रहते विकार में नहीं जाते हैं। वह फालोअर्स को बैठ शास्त्र आदि सुनाते हैं। आत्मा का ज्ञान देते हैं, उनके भी शिष्य होते हैं। लेकिन उनके शिष्य उनके बील्वेड सन नहीं बन सकते क्योंकि वह तो घरबार, बच्चे वाला होता है। तो वह अपने पास तो बिठा नहीं सकते। न खुद संन्यास किया हुआ है, न औरों को संन्यास करा सकता है। उनके शिष्य भी गृहस्थ में रहते हैं। उनके पास आते जाते रहते हैं। वह सिर्फ उनको ज्ञान देते रहते अथवा मन्त्र दे देते हैं। बस। अब उनके वारिस तो बने नहीं तो उनकी वृद्धि कैसे होगी। बस ज्ञान देते देते शरीर छोड़ चले जाते।

देखो, एक माला है 108 की, दूसरी फिर उससे बड़ी 16108 की माला होती है। वह है चन्द्रवंशी घराने के रॉयल प्रिन्स प्रिन्सेज की माला। तो यहाँ जो इतना ज्ञान नहीं उठा सकते, प्युरीफाय नहीं बनते तो सजायें खाकर चन्द्रवंशी घराने की माला में आ



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

जायेंगे। प्रिन्स प्रिन्सेज तो बहुत होते हैं।



बिना (अनुराग)

बिना (अनुराग)

अभी नहीं तो कभी नहीं



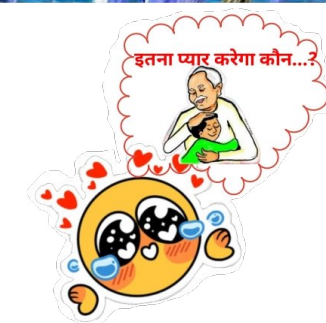
यह राज भी तुम अभी सुनते हो, जानते हो। वहाँ यह ज्ञान की बातें नहीं रहती। यह ज्ञान तो सिर्फ अब संगम पर मिलता है जब दैवी धर्म की स्थापना हो रही है। तो सुनाया जो पूरा कर्मेन्द्रियों को नहीं जीतेंगे वह चन्द्रवंशी घराने की माला में चले जायेंगे, जो जीतेंगे वह सूर्यवंशी घराने में आयेंगे। उन्होंने में भी तो नम्बरवार बनते हैं जरूर। शरीर भी अवस्था अनुसार मिलता है। देखो, सबसे मम्मा तीखी गई है तो उसको स्कॉलरशिप मिल गई है। मॉनीटर बन गई। उनको सारा ज्ञान का कलष दे दिया, उसको हम भी माता कहते क्योंकि मैंने भी सारा तन मन धन उनके चरणों में स्वाहा कर दिया, लौकिक बच्चों को नही दिया क्योंकि वह तो ब्लड कनेक्शन हो गया। यह तो इटरनल बच्चे बनते हैं, सब संन्यास कर आते हैं तो उन पर लव जास्ती जाता है। इटरनल लव सबसे तीखा होता है। संन्यासी तो अकेले घरबार छोड़ भाग जाते हैं। यहाँ तो सब ले आकर स्वाहा किया है।

समझा?

बेअवकाश सोचो

How humble my baba is...!

परमात्मा खुद प्रैक्टिकल में एक्ट कर दिखलाते हैं।



तुमको कोई भी प्रश्न का जवाब यहाँ मिल सकता है। वह परमात्मा खुद भी आकर बता सकते हैं। वह तो जादूगर है, उसका यह जादूगरी का पार्ट अभी चल रहा है। तुम तो बहुत प्यारे बच्चे हो, तुमको बाप कभी खफ़ा (नाराज़) नहीं कर सकते। खफ़ा करें तो बच्चे भी गुस्सा करना सीख जायें। यहाँ तो सबका आन्तरिक लव है। स्वर्ग में भी कितना प्रेम रहता है। वहाँ तो सतोप्रधान रहते हैं।

How Sweet...!



यहाँ जो विजीटर्स आते हैं उन्हीं की भी बहुत सेवा होती है क्योंकि उन्हीं पर भी पीस और हैपीनेस की वर्षा होती है। वह बील्वेड प्रजा बनने वाले हैं। माँ बाप बच्चे सब उनकी सर्विस में लग जाते हैं। भल देवी देवता बन रहे हैं लेकिन यहाँ वह पद का अंहकार नहीं रहता। सब ओबीडियन्ट सर्वेन्ट बन सर्विस में हाज़िर हो जाते हैं। गॉड भी ओबीडियन्ट

How humble my baba is...!
११२
४१२११

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



सर्वेन्ट बन अपने बील्वेड सन्स और प्रजा की सर्विस करते हैं। उनकी बच्चों के ऊपर ही ब्लिस रहती है।

अच्छा!



मीठे-मीठे सिकीलधे नूरे रत्न, कल्प-कल्प के बिछुड़े

हुए बच्चे जो फिर से आकर मिले हैं, ऐसे बच्चों प्रति

मात पिता बापदादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से

यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी

बच्चों को नमस्ते।



आपका शुक्रिया

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

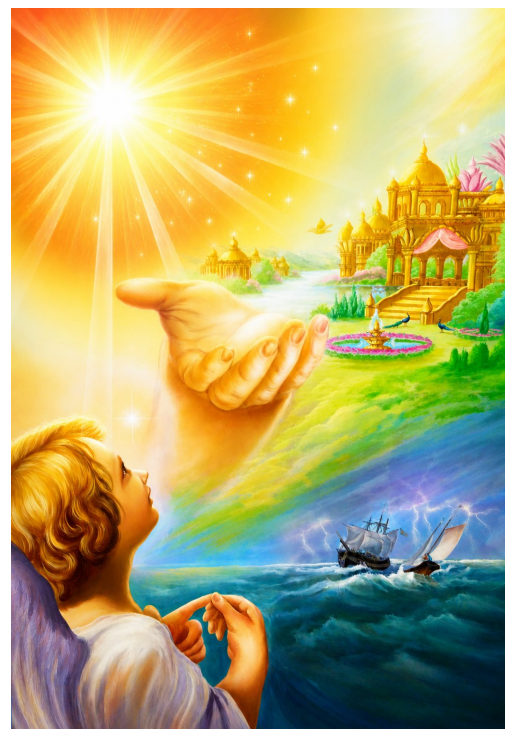
धारणा के लिए मुख्य सार:-



- 1) जैसे बापदादा बच्चों को कभी खफ़ा (नाराज़) नहीं करते, ऐसे तुम बच्चों को भी किसी को नाराज़ नहीं करना है, आपस में आन्तरिक लव से रहना है। कभी गुस्सा नहीं करना है।



- 2) पीस और ब्लिस का वरदान लेने के लिए शमा पर पूरा फिदा होना है। पढ़ाई से सुप्रीम पीस और हैपीनेस का गॉडली अधिकार लेना है।



(शमा कहे परवाने से, परे चला जा मेरी तरह जल जायेगा, यहाँ नहीं आ) - (२)
वो नहीं सुनता उसको जल जाना होता है
हर खुशी से, हर ग़म से, बेगाना होता है



Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

23-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- अपने प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने वाले श्रेष्ठ तकदीरवान भव

Finale Achievement

कोई भी बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के प्रमाण दिये जाते हैं।



लेकिन सबसे श्रेष्ठ प्रमाण प्रत्यक्ष प्रमाण है।

Definition of

प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् जो हो, जिसके हो उसकी स्मृति में रहना।

जो बच्चे अपने यथार्थ वा अनादि स्वरूप में स्थित रहते हैं वही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त हैं।

उनके भाग्य को देखकर भाग्य बनाने वाले की याद स्वतः आती है।

स्लोगन: अपने रहम की दृष्टि से हर आत्मा को परिवर्तन करने वाले ही पुण्य आत्मा हैं।



Definition of

s:

ज्ञान

योग

धारणा

सेवा

M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो



कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के कारण आपके सामने परीक्षा के रूप में आये लेकिन

आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार से, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल का संस्कार वा स्वभाव धारण कर लो- यही है उपकार करना।



If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.1 सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो:

(अ) मीठे बच्चे, सुबह का समय बहुत अच्छा है। सवेरे-सवेरे उठ यहाँ आकर बैठो तो याद ठहरेगी, फिर धीरे-धीरे आदत पड़ने से याद पक्की हो जायेगी। तुम देखते हो कई बच्चे सवेरे उठ नहीं सकते। 10-15 वर्ष मेहनत करते आये हैं, तो भी समय पर उठ नहीं सकते। कम से कम 3-4 बजे तो उठो। भक्त लोग भी सवेरे उठ कर ध्यान करते हैं, जाप करते हैं हनुमान का, शिव का। तो सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को प्यार से याद करने की आदत पक्की डालनी है। रात को जल्दी सो जाओ। कोशिश करो रात को एक-दो बजे जागने की। बहुत जमा करना है ना! तुम नींद को जीतने वाले मशहूर हो।

हो जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

(आ) कॉलेज के बच्चे भी सवेरे उठ कर अध्ययन करते हैं। सवेरे क्यों बैठते हैं? क्योंकि आत्मा विश्राम कर रिफ्रेश हो जाती है। सवेरे उठने का शौक होना चाहिए। क्वीन विक्टोरिया का वज़ीर भी रात को बाहर बत्ती के नीचे जा कर पढ़ता था। भक्तिमार्ग में भी सवेरे उठते हैं। ज्ञानमार्ग में सवेरे उठ कर बाप को याद करना चाहिए। बाप कहते हैं तुम्हारा यह रूहानी धन्या बहुत अच्छा है। सवेरे और शाम को इस सर्विस में लग जाओ। शाम का समय 6 से 7 बजे का अच्छा होता है। सत्संग आदि भी सवेरे और शाम को करते हैं।

100

AmritVela.p65



2/18/2010, 11:58 AM

Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise.
Benjamin Franklin



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

(इ) मीठे बच्चे, याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है। उस समय अन्तर्मुखी बन आत्म-स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ।

Attention...!

(ई) सवेरे-सवेरे उठ याद में ज़रूर बैठना चाहिए। इसमें गफलत नहीं करनी है। पुण्य का खाता जमा करना है। बच्चे, माया से भी डरो मत। भल कितना भी भुलाने की कोशिश करे, लेकिन थको नहीं। अमृतवेले उठ याद में रहने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करो। परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर बहाने बहुत बनाते हैं। अगर सवेरे-सवेरे उठते नहीं हैं, तो जिन सोया तिन खोया। सिर्फ सोना और खाना — यह तो गँवाना है। इसलिए सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो।

